

लोक सुनवाई हेतु बगदेवा भूमिगत परियोजना 0.76 एमटीवाय की पर्यावरण प्रबंधन योजना का सारांश

1.0 परियोजना विवरण

यह परियोजना बगदेवा भौमिकी खण्ड "ब्लाक" का एक हिस्सा है। यह परियोजना छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा जिले में एसईसीएल के कोरबा क्षेत्र में अवस्थित है। यह ब्लाक सर्वे आफ इण्डिया के टोपोशीट क्र० 64 जे/11 के अनुसार 22°22'34"–22°23'47" उत्तरी आक्षांश एवं 82°30'37" – 82°33'35" पूर्वी देशान्तर के बीच अवस्थित है। यह खण्ड बिलासपुर कटघोरा राज्य राजमार्ग के पूर्व में लगभग 1.5 कि०मी० की दूरी पर अवस्थित है यह खान सुतारा बगदेवा सड़क द्वारा सुतारा से जुड़ा हुआ सबसे नजदीकी रेल हेड गोवरा रोड है, जो दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के चौपा कोरबा ब्रांच लाइन पर अवस्थित है और 20 कि०मी० की दूरी पर है ।

सबसे नजदीकी वायु मण्डलीय वेधशाला बिलासपुर में है। यहाँ का मौसम उप उष्णकटिबंधीय है और मुख्यतः तीन प्रमुख मौसम हैं। अप्रैल से जून तक गर्मी मौसम रहता है। व मई माह में अधिकतम तापमान 44.7° से० तक बढ़ता है जुलाई से सितम्बर तक मानसून का मौसम रहता है एवं उस समय अधिकतम बारिश 1516 मि०मी० तक होती है जाड़ा के मौसम की अवधि छोटी होती है। एवं उस दौरान दिसम्बर माह में 5 से० तापमान नीचे गिरता है जाड़ा में सापेक्ष आर्द्रता 33 प्रतिशत से 95 प्रतिशत तक रहता है।

निकासी की जाने वाली परत का नाम	:- परत G-II, G-III(बॉट), G-III(टाप)
परत मोटाई सीमा मी०	:- 0.90 मी० 3.00 मी०
कोयला का ग्रेड	:- ग्रेड बी
शेष खनन योग्य भण्डार"दि० 01–04–07 तक"	:- 11.26 मि०टन
लक्ष्य उत्पादन	:- 0.76 एमटीवाय
खान की शेष अवधि	:- 19 वर्ष

खान में प्रवेश :-वर्तमान खान में प्रवेश का संक्षिप्त विवरण निम्न है।
एन्कलाइन – दो – आकार 4.2 मी० ग 2.5 मी० 165 मी० लम्बाई इन्टेक
एअरशाफ्ट – दो – आकार 5.0 मी० डाय ग 58 मी० गहरा एक इन्टेक दूसरा वापसी

खान सीमा	:- उत्तर भ्रंश F9F9 , 15 मी० हार्ड कवर लाइन
दक्षिण	:- खोलार नाला एवं भ्रंश F7F7 एवं F10F10
पूर्व	:- भ्रंश F8F8, F10F10, व्यवहार्य परत मोटाई लाइन
पश्चिम	:- G-II परत के 15 मी० हार्ड कवर लाइन एवं सड़के से 40 मी०

खनन प्रणाली

साइड डिस्चार्ज बोर्ड एवं पिलर द्वारा बोर्ड एवं पिलर पद्धति से विकास कार्य किया जा रहा है, जिसमें विकास कार्य के लिए खान में साइड डिस्चार्ज लोडर एवं लोड हाउल उम्परो का इस्तेमाल हो रहा है कोयला फेस ड्रिल किया गया है। एवं विस्फोटित किया जा रहा है तथा बेल्ट कन्वेयर पर एसडीएल एवं एलएचडी द्वारा लदान किया जा रहा है।
खनन एवं अन्य कार्यों के लिए लगाये गये प्रमुख उपकरण

एसडीएल, एसडीएल पैनल में बेल्ट कन्वेयर:- एलएचडी , एलएचडी पैनलों में बेल्ट कन्वेयर तथा सरफेस में बंकर एवं टिप्पर

2.0 पर्यावरण का विवरण

सामाजिक आर्थिक अवस्था

परियोजना के अध्ययन क्षेत्र के अन्दर सामाजिक आर्थिक रूपरेखा 2001 के जनसांख्यिकी आंकड़ों पर आधारित हैं भू उपयोग पैटर्न, आधारभूत और नागरिक सुविधा का विस्तृत विवरण उपलब्ध 2001 में संग्रहित जनसांख्यिकी की आंकड़ों पर आधारित हैं। कुल 56933 व्यक्तियों में से 50.66 प्रतिशत पुरुष एवं 49.34 प्रतिशत महिलायें हैं कुल जनसंख्या का 9.50 प्रतिशत अनुसूचित जाति तथा 39.47 प्रतिशत अनुसूचित जन जाति हैं। लगभग 49.70 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर हैं।

आंकड़ों से यह पता चलता है कि 30.00 प्रतिशत जनसंख्या मुख्य कामगार है 13.78 प्रतिशत सीमांत कामगार है, और शेष 56.22 प्रतिशत गैर कामगार हैं।

भूमि

अ. आवश्यकता

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भू उपयोग संरचना नीचे तालिका में दी गई है:-

अनुक्रमांक	भूमि काविवरण	क्षेत्र "हेक्टेयर में"
1	सरकारी भूमि	76.81
2	टेनेन्सी	143.51
3	वनभूमि	282.28
4	कुल भूमि	502.60

भू उपयोग

यह परियोजना का बफर जोन परियोजना की परिधि से 10 कि०मी० के व्यास क्षेत्र में है। कोर और बफर जोन का समग्र क्षेत्र पर्यावरण प्रभाव के लिए अध्ययन क्षेत्र कहलाता है। उसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल लगभग 31615.00 हेक्टेयर है।

संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैं

क्र०सं०	भू उपयोग	क्षेत्र हेक्टेयर में	कुल क्षेत्र का प्रतिशत
अ	वन भूमि	10527.00	33.33
ब	सिंचित कृषि भूमि	457.00	1.45
स	असिंचित कृषि भूमि	15183.00	48.02
द	कृषि योग्य बंजर भूमि	3152.00	9.97
ई	कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि	2296.00	7.26
	कुल	31615.00	100.00

आंकड़ों से यह प्रतीत होता है कि अध्ययन क्षेत्र के कुल 31615.00 हेक्टेयर में से लगभग 33.33 प्रतिशत वन भूमि, 49.47 प्रतिशत कृषि भूमि 9.97 प्रतिशत कृषि योग्य बंजर भूमि एवं 7.26 प्रतिशत कृषि के अनुपलब्ध भूमि हैं।

जल भू विज्ञान

भू जल सर्वे यूनिट सिंचाई विभाग द्वारा किये गये रिकार्ड के अनुसार पूर्व मानसून एवं उत्तर मानसून के दौरान हाइड्रोग्राफ स्टेशनों में पिछले 16 वर्षों ;1990 – 2007 के भू जल स्तर अध्ययन के अनुमान के अनुसार वर्षवार स्थैतिक जल स्तर 6.07 मी० ;पूर्व मानसून औसत एवं 3.26 मी० ;उत्तर मानसून औसत हैं।

कुंओं से स्थायी तौर पर किये गये पर्यवेक्षणों आँकड़ों से यह पता चलता है कि भू जल स्तर में औसत उतार चढ़ाव 2.81 मीटर हैं इनफिल्ट्रेशन इन्डेक्स के लिए भू जल पुनर्भराव की गणना जीईसी नियमों पर आधारित है जिसके अनुसार 11.5 प्रतिशत हैं रैनफाल इनफिल्ट्रेशन पद्धति के आधार पर 42.20 एमसीयूएम पानी का पुनर्भराव आकलन किया गया है। इस क्षेत्र में पानी का डिस्चार्ज 11.19 आकलित हैं एवं इस क्षेत्र में सरप्लस पानी 31.01 एमक्यूएम है।

पर्यावरणीय गुणवत्ता

अ. परिवेशी वायु की गुणवत्ता

इस परियोजना स्थल का वायु गुणवत्ता आँकड़ा अधिकतम स्थिरता को दर्शाता हैं जाड़े के दिनों में एसपीएम, आरपीएम, एनओएक्स, एसओ₂ कमशः 276, 112, 22 एवं 23 यूजी/सीएम दर्शाता हैं जो व्यवहार्य सीमा के अन्दर है।

ब. जल गुणवत्ता

सतह जल एवं आसपास में खान से निकाले गये पानी सहित विविध क्षेत्रों के पानी के नमूनों को संग्रहितकर विश्लेषण किया गया विश्लेषण परिणाम यह दर्शाता है कि भौतिक एवं रसायनिक पारामीटर पेय जल के लिए आईःएसः 10500 की निर्धारित सीमा के अन्दर हैं भूमिगत

खान का बहिः प्रवाह नियमित प्रबोधन किया गया तथा उसकी गुणवत्ता एमओईएम/सीपीसीबी मानक द्वारा निर्धारित सीमा के अन्दर पाया गया।

स. ध्वनि स्तर

इस क्षेत्र के ध्वनि स्तर की जाँच के लिए दिन और रात्रि के दौरान निरंतर रिकार्ड किया गया जिसके अनुसार ध्वनि स्तर क्रमशः 45.5 से 74.3 डी बी "ए" एवं 35.6 से 64.2 डीबीए पाया गया है यह ध्वनि स्तर एमओईएफ की मानक सीमा के निर्धारित सीमा के अन्तर्गत है (कृपया जीएसआर 742 ई दिनांक 25.09.2000 देखें) प्रदूषण के मुख्य स्रोत सीएचपी, कर्मशाला एवं/खान के पंखें हैं।

ध्वनि/स्तर को व्यवहार्य सीमा के अंतर्गत सीमित करने के लिए ग्रीन बेल्ट का विकास एवं अन्य नियंत्रण उपाय सुझाये गये हैं।

वनस्पति एवं जीवों की संरचना

अध्ययन क्षेत्र में वन क्षेत्र 10527.00 हे० है, जो केवल 33.33 प्रतिशत हैं वन विभाग से उपलब्ध सूचना के आधार पर तथा स्थानीय वन अधिकारियों से वनस्पति एवं जीव की उपलब्धता के संबंध में विचार विमर्श के पश्चात् ही कोर जोन एवं बफर जोन के वनस्पति एवं जीवों की उपलब्धता का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

3.0 प्रत्याशित पर्यावरणीय प्रभाव एवं निराकरण उपाय

सामाजिक आर्थिक अवस्था

रोजगार अवसर, व्यापार एवं व्यवसाय में वृद्धि सामुदायिक विकास आवागमन सुविधाओं के विकास आदि होने से इस क्षेत्र की सामाजिक आर्थिक रूपरेखा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

भू उपयोग पर प्रभाव

कोरजोन के अन्दर स्थित मुख्य भू-सेरचना प्रभावित नहीं होंगे चूंकि डिपिलरिंग प्रक्रिया नहीं अपनायी जायेगी विकसित पिलर खड़े छोड़ दिये जायेंगे फसल की क्षतिपूर्ति उस दौरान की जायेगी जब पैनल के डिपिलरिंग सतह पर टेनेन्सी भूमि का अवलोकन होता है।

इस क्षेत्र की मौलिक स्थलाकृति के अनुरक्षण के लिए अवतलित भूमि और दरारों को मिट्टी से भर दिये जायेंगे।

पर्यावरण का प्रभाव

वायु गुणवत्ता- परियोजना क्षेत्र के अन्दर और आसपास एसपीएम, आरपीएस, एसओ₂ एवं एनओ_x के सम्बन्ध में वायु गुणवत्ता एक ओई एफ की निर्धारित सीमा के अन्दर है यदि उचित निराकरण उपाय का ध्यान नहीं रखा गया था इन पारामीटरों की मात्रा बढ़ सकती है, जिसके

कारण तंत्रिकीय, सिलिकामय आदि फुसमीय रोग कम दृष्टि के कारण आंखों में चिड़चिड़ापन आदि हो सकते हैं।

जल पर्यावरण :- गैर उपचारित खान जल एवं घरेलु विस्सरण जल सतह जल में मिल जाने पर प्रदूषण का कारण बन सकते हैं इसमें मिले ज्यादातर ठोस, ग्रीस, सीओडी एवं बीओडी घुलनशील पदार्थ क्लोराइड, जैविक मिश्रण नंसपब सपमि और मानवीय स्वास्थ्य की समस्या को गंभीर बना सकता हैं।

भू जल स्तर के नीचे आने से इस क्षेत्र में पानी के अभाव की समस्या बढ़ सकती है।

ध्वनि पर्यावरण

लगातार उच्च ध्वनि स्तर के कारण मानव एवं अन्य जीवों पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ सकते हैं।

- ' चिढ़ एवं चिढ़चिढ़ापन
- ' मानसिक एवं शारीरिक थकान
- ' सामान्य कार्यकलाप में बाधा
- ' शारीरिक समस्या के कारण श्रवण शक्ति में ह्रास
- ' हृदय संबंधी रोग
- ' कार्य में बाधा
- ' मास्क के कारण संचार बाधा
- ' उच्चरक्त चाप

जीव एवं वनस्पति:-

जीव एवं वनस्पति पर निम्नलिखित चिन्हित प्रभाव पड़ सकते हैं:-

आशा है कि बहुत गहराई में होने वाली भूमिगत खनन प्रक्रिया से विद्यमान वनस्पति एवं जीवों को कोई खतरा नहीं पहुंचेगा। हालांकि विकास कार्यो एवं जनसंख्या वृद्धि के कारण कुछ अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ेगा, जो कि क्षेत्रीय प्राधिकारियों द्वारा कठोर नियंत्रण उपाय अपनाकर दूर किया जायेगा।

जल भूवैज्ञानिक स्थिति :-

जैसा कि उल्लेखित है जलभृत की निम्न पारगम्यता के कारण स्थानीय जल क्षेत्र पर खनन का प्रभाव न्यून रहेगा और इसका प्रभाव सीमित दायरे के अन्दर बहुत छोटे हिस्से में रहेगा अतः स्तरण के कारण भी व्यक्तिगत पारगम्य सेस्तर व्यक्तिगत ड्रा डाउन कोन में विकसित होंगे तथा प्रायः कुछ सौ मीटर के सीमित क्षेत्र में प्रभाव पड़ेगा।

4.0 प्रदूषण नियंत्रण उपाय का क्रियान्वयन एवं प्रबोधन

यह पर्यावरण प्रबंधन के निम्नलिखित पहलुओ की देखरेख करेगां

- पर्यावरण डाटा बैंक का सृजन
- अन्य एजेन्सियों और परामर्शदाताओं के सहयोग से परियोजना के लिए माइक्रो पर्यावरण प्रबंधन योजना को शामिल करना
- पर्यावरण नियंत्रण उपायों सहित परियोजना क्रियान्वयन का प्रबोधन
- परियोजना का समय पर क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए अन्य परियोजना प्रक्रिया के साथ समन्वयन
- जल और वायु प्रदूषण का निराकरण और नियंत्रण के लिए पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, केन्द्र/राज्य प्रदूषण बोर्ड से समन्वय करना

5.0 अतिरिक्त अध्ययन

लोक परामर्श

स्थानीय प्रभाव एवं अन्य जो परियोजना/प्रक्रिया का पर्यावरण प्रभाव पर विश्वास रखते हैं इनकी चिन्ता दूर करने के लिए स्थानीय प्रभावित लोगों के लिए परियोजना स्थल या आसपास क्षेत्र में परामर्श लिया जायेगा।

जोखिम निर्धारण

जोखिम का निर्धारण एवं इसका प्रबंधन सुरक्षा एवं बड़ी दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए जरूरी है "बड़ी दुर्घटना" शब्द का अर्थ औद्योगिक काम काज के दौरान अप्रत्याशित एवं असामान्य कारणों से तत्काल घटना घटित होना है जिसे लोगों को या पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न हो चाहे वह तुरंत हो या विलम्ब से, चाहे स्थापना के अन्दर हो या बाहर जिसमें एक या अधिक विपदायें आ सकती हैं।

6.0 परियोजना लाभ

सामाजिक संरचना में उन्नति

'अ' साक्षरता अभियान

एसईसीएल में कामगारों के बीच 100 प्रतिशत साक्षरता के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वर्ष 1992 में एक कार्य योजना तैयार की गई थीं इसी योजना के अंतर्गत 100 प्रतिशत की साक्षरता के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बगदोवा भूमिगत परियोजना को शामिल किया जायेगा।

"ब" सामाजिक आर्थिक विकास

- 1 नजदीक के गांवों में परियोजना द्वारा सामुदायिक विकास का कार्य किया जायेगा
- 2 परियोजना द्वारा गांवों के लिए व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम उपलब्ध कराया गया है।

रोजगार क्षमता

'अ' परियोजना में विविध श्रेणी के 1064 व्यक्तियों के लिए प्रत्यक्ष रोजगार अवसर प्रदान किया जायेगा

"ब" सहायक रोजगार अवसर

खान के प्रारंभ होने से इस क्षेत्र में स्वाभाविक रूप से आर्थिक प्रेरणा मिलेगी आर्थिक विकास के साथ साथ इस क्षेत्र में व्यापारी और निजी उद्योग पनपेंगे इसके अतिरिक्त राज्य के ठेकेदार रॉयल्टी की लेवी विक्रयकर आदि के माध्यम वित्तीय राजस्व अर्जित करेंगे और केन्द्र सरकार को केन्द्रीय विक्रयकर, आयकर सेस आदि के माध्यम से लाभ मिलेगा।

7.0 पर्यावरणीय प्रबोधन कार्यक्रम क्षतिपूर्ति

कोरजोन के अन्दर स्थित मुख्य भू संरचना प्रभावित नहीं होंगे चूंकि डिपिलरिंग प्रक्रिया नहीं अपनायी जायेगी विकसित पिलर खड़े छोड़ दिये जायेंगे फसल की क्षतिपूर्ति उस दौरान की जायेगी जब पैनल के डिपिलरिंग सतह पर टेनेन्सी भूमि का अवलोकन होता है।

पुनरुद्धार

इस क्षेत्र की मौलिक स्थलाकृति के अनुरक्षण के लिए अवतलित भूमि और दरारों को मिट्टी से भर दिये जायेंगे।

वायु प्रदूषण नियंत्रण उपाय

खनन संचालन के कारण वायु गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रत्याशित प्रभाव को ध्यान में रखते हुए परियोजना के लिए निम्न लिखित नियंत्रण उपाय किये गये हैं:-

— धूल दमन के लिए सरफेस कोल बंकर में फुहारा जल छिड़काव व्यवस्था की जायेगी

इस परियोजना कोयला विक्रय के लिए सड़क बनाया जायेगा तथा कोयला परिवहन के लिए सभी ट्रको को तारपोलिन से ढका जायेगा

— पहुंच मार्गों का ब्लेक टर्पिंग पहले ही पूर्ण किया जा चुका है

— कॉलोनी, औद्योगिक काम्पलेक्स और अन्य सेवा केन्द्रों के चारों ओर हरित क्षेत्र का विकास

— फल देने वाले पेड़ों के पौधे, औषधि पौधे, महत्वपूर्ण लकड़ी के वृक्ष एवं सजावट के वृक्ष लगायें जायेंगे।

जलप्रदूषण नियंत्रण उपाय

विश्लेषण परिणाम से यह पता चलता है कि जल का भौतिक एवं रसायनिक पारामीटर पेय जल की निर्धारित सीमा आई एस: 10500 के अंतर्गत हैं भूमिगत खान के निस्सरण की गुणवत्ता का नियमित प्रबोधन किया जाता है तथा उनकी गुणवत्ता एमओईएफ/सीपीसीबी मानदण्डों द्वारा निर्धारित सीमा के अन्दर हैं।

1. यद्यपि खान जल सहित निकले हुए पदार्थों को जमाने के लिए 82000 गैलन क्षमता का खान सम्प उपलब्ध कराया गया है।
2. खान से निकाले गये जल को उपचारित करने के पश्चात् इसे घरेलु और औद्योगिक उपयोग में लाया जायेगा।
3. खान जल के उपचार के लिए 88000 एवं 62000 गैलन क्षमता के 2 सेटलिंग टैंक लगाये गये हैं ।
4. कर्मशाला निस्सरण के उपचार के लिए आयल एवं ग्रीस ट्रेप लगाये जायेंगे ।
5. परियोजना अवधि के दौरान सतह जल गुणवत्ता एवं भू जल स्तर का प्रबोधन किया जायेगा।

ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण उपाय

ध्वनि/स्तर को व्यवहार्य सीमा के अंतर्गत सीमित करने के लिए ग्रीन बेल्ट का विकास एवं अन्य नियंत्रण उपाय सुझाये गये हैं ।

प्रत्याशित ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए निम्नलिखित नियंत्रण उपाय सुझाये गये हैं:-

- आवश्यकतानुसार इयर प्लग, इयरमफ का प्रावधान
- उपकरणों का दैनिक रखरखाव
- खान से कॉलोनी की पर्याप्त दूरी
- कॉलोनी एवं औद्योगिक काम्पलेक्स के चारों ओर ग्रीनबेल्ट

वनस्पति एवं जीवों की संरचना नियंत्रण उपाय

आशा है कि गहराई में होने वाली भूमिगत खनन प्रक्रिया से विद्यमान वनस्पति एवं जीवों को कोई खतरा नहीं पहुंचेगा। हालांकि विकास कार्य एवं जनसंख्या वृद्धि के कारण कुछ अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ेगा, जो कि क्षेत्रीय प्राधिकारियों द्वारा कठोर नियंत्रण उपाय अपनाकर दूर किया जायेगा ।

विपदा प्रबंधन

सुरक्षा एवं बड़ी घटनायें न होने देने के लिए विपदा प्रबंधन योजना आवश्यक है "बड़ी" घटना शब्द का अर्थ किसी व्यक्ति के औद्योगिक कामकाज के क्रम में असमान्य परिस्थिति के कारण असंभावित और तुरंत घटना घटित होना, जिसे लोगों को या पर्यावरण को गंभीर खतरा पैदा हो, चाहे वह तुरंत हो या देर में हो, चाहे वह स्थापना के बाहर हो या अन्दर हो, चाहे उससे एक या अधिक संकट उत्पन्न हों

उक्त बातों को ध्यान में रखते हुए तीन सिद्धान्त बनाये गये हैं, रोकथाम, तैयारी ;प्रोएक्टिव तथा रियेक्टिव और सुरक्षा के द्वारा कम करना, स्वास्थ्य लाभ राहत व पुनर्वास विपदा प्रबंधन योजना तैयार की विस्तृत रूपरेखा आदिं

पर्यावरणीय व्यय लाख रुपये

क्र.सं.	विवरण	पूंजी		राजस्व	
		विद्यमान	प्रस्तावित	विद्यमान	प्रस्तावित
अ	पर्यावरण लागत				
1	पर्यावरण नियंत्रण	17.72			
2	पर्यावरण प्रबंधन				
	अ. ईएमपी निर्माण		10.00		
	ब. पीजोमीटर निर्माण		5.00		
	स. वनस्पति एवं जीव अध्ययन				0.40 एक समय
	द. प्रबंधन				4.25
3	ग्रीन बेल्ट	15.00			18.75 एक समय
4	सब्सिडेन्स प्रबंधन				2.50
5	फायनल खान समापन				1.00
	उपयोग "अ"	32.72	15.00		26.90
ब	सामाजिक लागत				
.1	आकुपेशनल हेल्थ				
2	गांवों में सामुदायिक विकास	8.36			
	उप योग "ब"	8.36			
	कुल योग	41.08	15.00		26.90

खान समापन योजना

हालंकि खान की प्रक्रिया कुछ दशकों तक चल सकती है किन्तु इससे भू-धसान, परिस्थिति की एवं स्थानीय जीव जन्तु और प्राणी प्रभावित हो सकते हैं यदि उचित प्रबंधन न हुआ तो बहुत सारे स्टेक होल्डर के सामान्य कल्याण में क्षति हो सकता है अतः उक्त बाधित क्षेत्र में पुनर्वास को लक्ष्य में रखते हुए हर खान के लिए पर्याप्त समापन योजना होनी चाहिये जो कि वहां के स्थानीय समुदायों और विनियामक प्राधिकारियों को स्वीकार्य होनी चाहियें खान समापन की लागत लगभग 49.39 लाख रुपये होगी ।